ॐ

काशी-पंचकम्

मनो निवृत्तिः परमोपशान्तिः
सा तीर्थवर्या मणिकर्णिकाञ्च
ज्ञानप्रवाहा विमलादि गङ्गा, (गंगा)
सा काशिकाऽहं निज बोधरूपा॥१॥

(२)

यस्यामिदं कल्पितमिन्द्रजालं,
चराचरम् भाति मनोविलासम्।
सच्चित्सुखैका परमात्म रूपा,
सा काशिकाऽहं निजबोधरूपा॥

(३)

कोषेषु पंचस्वधिराजमाना,
बुद्धिर्भवानी प्रतिदेह गेहम्।
साक्षीशिवः सर्व गतोऽन्तरात्मा,
सा काशिकाऽहं निजबोधरूपा॥

—०— पृष्ठपर

(४)

काश्यांहि काशते काशी,
काशी सर्वं प्रकाशिका।
सा काशी विदिता येन
तेन प्राप्ताहि काशिका॥

(५)

काशीक्षेत्रं शरीरं त्रिभुवनजठरे-
व्यापिनी ज्ञानगंगा,
भक्ति श्रद्धा गयेयं निजगुरुचरण-
ध्यान योगः प्रयागः।
विश्वेशोऽयं तुरीय सकलजनमनः
साक्षीभूतोऽन्तरात्मा
देहे सर्वं मदीये यदि, वसति-
पुनस्तीर्थमन्यत्किमास्ति॥
(५)

॥श्री गुर्वष्टकम्॥

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं,
यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम्।
मनश्चेन लग्नं हरेरङ्घ्रि पद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥

कलत्रं धनं पुत्र पौत्रादि कीर्तिः,
गृहं बान्धवाः जाति मेतद्धि सर्वम्,
हरेरङ्घ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं, (पद्मे)
ततः किं ततः किम् ततः किं ततः किम्।

षडङ्गादि वेदो मुखे शास्त्रविद्या,
कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति
हरेरङ्घ्रि पद्मे मनश्चेन लग्नं,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किं।

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः
सदाचार वृत्तेषु मत्तो न चान्यः।
गुरोरङ्घ्रि पद्मे मनश्चेन लग्नं,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥

क्षमामण्डले भूप भूपालवृन्दैः,
सदा सेवितं यस्य पादार विन्दम्।
हरे रङ्घ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥

यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापात्,
जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रभावात्।
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥

न भोगे न योगे न वा वाजि राजौ,
न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम्
हरे रङ्घ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्

अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये,
न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये
गुरोरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्।

अनर्घ्याणि रत्नानि मुक्तानि सम्यक्।
समालिंगिता कामिनी यामिनीषु।
हरे रङ्घ्रि पद्मे मनश्चेन लग्नम्।
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥

गुरोरष्टकं यः पठेत्पुण्य देही,
यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही,
लभेद्वाञ्छितार्थं पदम् ब्रह्मसंज्ञं,
गुरो रुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम्॥

विद्या वित्त सुरूप गुण सुत दारा सुख भोग।
नारायण हरिभक्ति बिन, ये सब ही हैं रोग।
गर्भ चढ़े पुनि सूप चढ़े, पलना पै चढ़े चढ़े गोद [illegible]
घना के। हाथी चढ़े पुनि घोड़ा चढ़े सुख-
पाल चढ़े, चढ़े जोम घना के। बैरी [illegible]
और मित्र के चित्त चढ़े, [illegible] कावे ब्रह्म
भने दिन बीते पना के। ईश कृपालु को
जान्यो नहीं, अब काँधे चढ़े चले
चार जना के॥

(१) प्रातः स्मरण स्तोत्रम्

प्रातःस्मरामि ह्रदि संस्फुरदात्म-
तत्वम् सच्चित सुखं परमं हंस-
गतिम तुरीयम्।
यत्स्वप्न-जाग्रत्सुषुप्त मवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कल महं न च भूतसं

अर्थ = समस्त-चराचर भूत प्राणियों के हृदय
में स्वयं प्रकाश रूप से भासमान सत्
और आनन्द रूप ब्रह्म निष्ठ विरक्त परमहंस
सन्यासियों की परम गति रूप जो तुरीय
साक्षी चेतन आत्मतत्व है उसका मैं नि-
एकाग्रता से एवं परम श्रद्धाभक्ति से प्रा-
तःकाल में स्मरण करता हूँ, जो स्वप्न ज-
सुषुप्ति रूपी तीन अवस्थाओं को जानते
वाला निर्विकार द्रष्टा है, नित्य है
निष्कल - निरवयव [illegible] है वही
मैं हूँ। आकाशादि [illegible]
अल्प सद्रूप [illegible]
मैं नहीं हूँ [illegible]

~~देव मनसे कलमसे प्रतीमिततत~~
~~होतेहैं।~~ (२)

प्रातर्भजामि मनसो वच सामगम्य-
म। वाचो ~~विभान्ति~~ विभान्ति-
निखलायदनु ग्रहेण, यन्नेति
नेति वचनै र्निगमा अवोचु,
स्तं देव देव मज मच्युत
माहु ग्र्यम्॥

अर्थ - जो तत्त्व मन और वाणी से जाना नहीं
जाता है किन्तु जो मन वाणी का
प्रकाशक है उस स्वयं ज्योति
स्वरूप भगवान को मैं प्रातःकाल में
भजता हूं। जिसके सत्ता स्फूर्ति
रूपी अनुग्रह से तमाम प्राणियां
प्रतीत होती हैं यानी तमाम वाणी से
उपलक्षित यावत संसार जिसकी सत्ता
से भासमान है ऋग, यजु आदि वेदों
ने भी जिस ... उस तत्त्व को

वचनों में कह रहा है, यानी समस्त प्रपंचों को निषेध (निषेध करके) परिशेषरूप से बताया है, उस तत्त्व को विरक्त विद्वान् लोग अजन्मा, अविनाशी, सबसे श्रेष्ठ एवं देवों के देव महादेव रूप से प्रतिपादन करते हैं।

(३)

प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं
पूर्णं सनातन पदं पुरुषोत्तमाख्यम्।
यस्मिन्निदं जगदशेष महेषमूर्तौ
रज्ज्वां भुजङ्गम इव प्रति-
भासि—

अर्थ- मायारूपी अन्धकार से परे सूर्य के समान ज्योतिः स्वरूप यानी सर्व प्रकाशक पुरुषोत्तम नाम वाले पूर्ण सनातन पद को मैं प्रातः काल में नमस्कार करता हूँ जिस सर्वाभिन्न सर्वाधिष्ठान — में

विद्वानों को यह चराचर जगत
रस्सी में सर्प के समान मिथ्या
काल्पित मालूम होता है -

श्लोक त्रय मिदं पुण्यं लोकत्रय
विभूषणम्। प्रातः काले—
पठेद्यस्तु स गच्छेत्परमं पदम्॥

अर्थ - तीनों लोकों के भूषण रूप
इन पवित्र तीन श्लोकों को
जो प्रातः काल पढ़ता है
वह ब्रह्मनिर्वाण रूपी परम
पद को प्राप्त हो जाता है।
॥ इति प्रातः स्मरण स्तोत्रं समाप्तम्॥

ॐ

प्रश्नोत्तरी

स्वामिश्रीशंकराचार्यरचित

गीताप्रेस, गोरखपुर

मणिरत्नमाला

दाम दो पैसा

मणिरत्नमाला

दो पैसा

ॐ

प्रश्नोत्तरी

स्वामिश्रीशंकराचार्यरचित

गीताप्रेस, गोरखपुर

मुद्रक तथा प्रकाशक घनश्यामदास जालान, गीताप्रेस, गोरख

सं० १९८५ से २००२ तक ९०,०००
सं० २००३ त्रयोदश संस्करण ५,०००
सं० २००५ चतुर्दश संस्करण १०,०००
कुल १,०५,०००

पता—गीताप्रेस, गोरखपुर

श्रीहरिः

वक्तव्य

श्रीस्वामी शङ्कराचार्यजीकी प्रश्नोत्तर-मणि-
ला बहुत ही उपादेय पुस्तिका है । इसके
येक प्रश्न और उत्तरपर मननपूर्वक विचार
रना आवश्यक है । संसारमें स्त्री, धन और
त्रादि पदार्थोंके कारण ही मनुष्य विशेषरूपसे
न्धनमें रहता है, इन पदार्थोंसे वैराग्य होनेमें
ी कल्याण है, यही समझकर उन्होंने स्त्री, धन
ौर पुत्रादिकी निन्दा की है । स्त्रीके लिये विशेष
ोर देनेका कारण भी स्पष्ट है । धन, पुत्रादि
ोड़नेवाले भी प्रायः स्त्रियोंमें आसक्त देखे जाते
ं, वास्तवमें यह दोष स्त्रियोंका नहीं है, यह दोष
ो पुरुषोंके बिगड़े हुए मनका है; परन्तु मन
ड़ा चञ्चल है, इसलिये संन्यासियोंको तो स्त्रियोंसे

हर तरहसे अलग ही रहना चाहिये ।
पड़ता है कि यह पुस्तिका खासकर संन्यासि
लिये ही लिखी गयी थी। इसमें बहुत-सी
ऐसी हैं जो सभीके कामकी हैं। अतः अ
हमलोगोंको पूरा लाभ उठाना चाहिये ।
पुत्र, धन आदि संसारके सभी पदार्थोंसे
साध्य ममताका त्याग करना आवश्यक है ।

ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

❀ प्रश्नोत्तरी ❀

अपारसंसारसमुद्रमध्ये
सम्मज्जतो मे शरणं किमस्ति ।
गुरो कृपालो कृपया वदैत-
द्विश्वेशपादाम्बुजदीर्घनौका ॥१॥

प्रश्न	उत्तर
हे दयामय गुरुदेव ! कृपा करके यह बताइये कि अपार संसाररूपी समुद्रमें मुझ डूबते हुएका आश्रय क्या है ?	विश्वपति परमात्माके चरणकमलरूपी जहाज।

बद्धो हि को यो विषयानुरागी
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः ।

को वास्ति घोरो नरकः स्वदेहः
तृष्णाक्षयः स्वर्गपदं किमस्ति ।

प्रश्न	उत्तर
वास्तवमें बँधा कौन है ?	विषयोंमें आसक्त ।
विमुक्ति क्या है ?	विषयोंसे वैराग्य ।
घोर नरक क्या है ?	अपना शरीर ।
स्वर्गका पद क्या है ?	तृष्णाका नाश होना ।

संसारहृत्कः श्रुतिजात्मबोधः
को मोक्षहेतुः कथितः स एव ।
द्वारं किमेकं नरकस्य नारी
का स्वर्गदा प्राणभृतामहिंसा ।

प्रश्न	उत्तर
संसारको हरनेवाला कौन है ?	वेदसे उत्पन्न आत्मज्ञान

मोक्षका कारण क्या कहा गया है ?	वही आत्मज्ञान ।
नरकका प्रधान द्वार क्या है ?	नारी ।
स्वर्गको देनेवाली क्या है ?	जीवमात्रकी अहिंसा ।

शेते सुखं कस्तु समाधिनिष्ठो
जागर्ति को वा सदसद्विवेकी ।
के शत्रवः सन्ति निजेन्द्रियाणि
तान्येव मित्राणि जितानि यानि ।४।

प्रश्न	उत्तर
(वास्तवमें) सुखसे कौन सोता है ?	जो परमात्माके स्वरूपमें स्थित है ।
और कौन जागता है ?	सत् और असत्के तत्त्वका जाननेवाला ।

शत्रु कौन हैं ?	अपनी इन्द्रियाँ; पर जो जीती हुई हों वही मित्र हैं।

को वा दरिद्रो हि विशालतृष्णः
श्रीमांश्च को यस्य समस्ततोषः।
जीवन्मृतः कस्तु निरुद्यमो यः
किं वामृतं स्यात्सुखदा निराशा।

प्रश्न	उत्तर
दरिद्र कौन है ?	भारी तृष्णावाला।
और धनवान् कौन है ?	जिसे सब तरहसे सन्त
(वास्तवमें) जीते-जी मरा कौन है ?	जो पुरुषार्थहीन है।
और अमृत क्या हो सकता है ?	सुख देनेवाली निराश (आशासे रहित होन

पाशो हि को यो ममताभिमानः
सम्मोहयत्येव सुरेव का स्त्री।

को वा महान्धो मदनातुरो यो
मृत्युश्च को वापयशः स्वकीयम् ।६।

प्रश्न	उत्तर
स्तवमें फाँसी क्या है ?	जो'मैं'और'मेरा' पन है।
दिराकी तरह क्या तेज निश्चय ही मोहित र देती है ?	नारी ही।
और बड़ा भारी अन्धा कौन है ?	जो कामवश व्याकुल है।
त्यु क्या है ?	अपनी अपकीर्ति।

को वा गुरुर्यो हि हितोपदेष्टा
शिष्यस्तु को यो गुरुभक्त एव ।
को दीर्घरोगो भव एव साधो
किमौषधं तस्य विचार एव ।७।

प्रश्न	उत्तर
गुरु कौन है ?	जो केवल हितका ही उपदेश करनेवाला है
शिष्य कौन है ?	जो गुरुका भक्त है, वही
बड़ा भारी रोग क्या है ?	हे साधो ! बार-बार जन्म लेना ही ।
उसकी दवा क्या है ?	परमात्माके स्वरूपका मनन ही ।

किं भूषणाद्भूषणमस्ति शीलं
तीर्थं परं किं स्वमनो विशुद्धम् ।
किमत्र हेयं कनकं च कान्ता
श्राव्यं सदा किं गुरुवेदवाक्यम् ।८।

प्रश्न	उत्तर
भूषणोंमें उत्तम भूषण क्या है ?	उत्तम चरित्र ।

सबसे उत्तम तीर्थ क्या है ?	अपना मन जो विशेषरूप-से शुद्ध किया हुआ हो ।
इस संसारमें त्यागने योग्य क्या है ?	काञ्चन और कामिनी ।
सदा(मन लगाकर) सुनने योग्य क्या है ?	वेद और गुरुका वचन ।

के हेतवो ब्रह्मगतेस्तु सन्ति
सत्सङ्गतिर्दानविचारतोषाः ।
के सन्ति सन्तोऽखिलवीतरागा
अपास्तमोहाः शिवतत्त्वनिष्ठाः ।६।

प्रश्न	उत्तर
परमात्माकी प्राप्तिके क्या-क्या साधन हैं ?	सत्सङ्ग, सात्त्विक दान, परमेश्वरके स्वरूपका मनन और सन्तोष ।

महात्मा कौन हैं ?	संपूर्ण संसारसे जिनकी आसक्ति नष्ट हो गयी है, जिनका अज्ञान नाश हो चुका है और जो कल्याणरूप परमात्म-तत्त्वमें स्थित हैं ।

को वा ज्वरः प्राणभृतां हि चिन्ता
मूर्खोऽस्ति को यस्तु विवेकहीनः ।
कार्या प्रिया का शिवविष्णुभक्तिः
किं जीवनं दोषविवर्जितं यत् ।१०।

प्रश्न	उत्तर
प्राणियोंके लिये वास्तवमें ज्वर क्या है ?	चिन्ता ।
मूर्ख कौन है ?	जो विचारहीन है ।
करने योग्य प्यारी क्रिया क्या है ?	शिव और विष्णुकी भक्ति ।

वास्तवमें जीवन कौन-सा है?	जो सर्वथा निर्दोष है।

विद्या हि का ब्रह्मगतिप्रदा या
बोधो हि को यस्तु विमुक्तिहेतुः ।
को लाभ आत्मावगमो हि यो वै
जितं जगत्केन मनो हि येन ।।११।

प्रश्न	उत्तर
वास्तवमें विद्या कौन-सी है?	जो परमात्माको प्राप्त करा देनेवाली है।
वास्तविक ज्ञान क्या है?	जो (यथार्थ) मुक्तिका कारण है।
यथार्थ लाभ क्या है?	जो परमात्माकी प्राप्ति है, वही।
जगत्को किसने जीता?	जिसने मनको जीता।

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा
मनोजबाणैर्व्यथितो न यस्तु ।

प्राज्ञोऽथ धीरश्च समस्तु को वा
प्राप्तो न मोहं ललनाकटाक्षैः ।१२।

प्रश्न	उत्तर
वीरोंमें सबसे बड़ा वीर कौन है ?	जो कामबाणोंसे पीड़ित नहीं होता ।
बुद्धिमान्, समदर्शी और धीर पुरुष कौन है ?	जो स्त्रियोंके कटाक्षोंसे मोहको प्राप्त न हो ?

विषाद्विषं किं विषयाः समस्ता
दुःखी सदा को विषयानुरागी ।
धन्योऽस्ति को यस्तु परोपकारी
कः पूजनीयः शिवतत्त्वनिष्ठः ।१३।

प्रश्न	उत्तर
विषसे भी भारी विष कौन है ?	सारे विषयभोग ।
सदा दुःखी कौन है ?	जो संसारके भोगोंमें आसक्त है ।

और धन्य कौन है ?	जो परोपकारी है ।
पूजनीय कौन है ?	कल्याणरूप परमात्म-तत्त्वमें स्थित महात्मा ।

सर्वास्ववस्थास्वपि किन्न कार्यं
किं वा विधेयं विदुषा प्रयत्नात् ।
स्नेहं च पापं पठनं च धर्मं
संसारमूलं हि किमस्ति चिन्ता ।१४।

प्रश्न	उत्तर
सभी अवस्थाओंमें विद्वानोंको बड़े जतनसे क्या नहीं करना चाहिये और क्या करना चाहिये ?	संसारसे स्नेह और पाप नहीं करना तथा सद्-ग्रन्थोंका पठन और धर्मका पालन करना चाहिये ।
संसारकी जड़ क्या है ?	(उसका) चिन्तन ही ।

विज्ञान्महाविज्ञतमोऽस्ति को वा
नार्या पिशाच्या न च वञ्चितो यः ।

का शृङ्खला प्राणभृतां हि नारी
दिव्यं व्रतं किं च समस्तदैन्यम् ।१५।

प्रश्न	उत्तर
समझदारोंमें सबसे अच्छा समझदार कौन है ?	जो स्त्रीरूप पिशाचिनी- से नहीं ठगा गया है।
प्राणियोंके लिये साँकल क्या है ?	नारी ही ।
श्रेष्ठ व्रत क्या है ?	पूर्णरूपसे विनयभाव ।

ज्ञातुं न शक्यं च किमस्ति सर्वै-
र्योषिन्मनो यच्चरितं तदीयम् ।
का दुस्त्यजा सर्वजनैर्दुराशा
विद्याविहीनः पशुरस्ति को वा ।१६।

प्रश्न	उत्तर
सब किसीके लिये क्या जानना सम्भव नहीं है ?	स्त्रीका मन और उसका चरित्र ।

सब लोगोंके लिये क्या त्यागना अत्यन्त कठिन है?	बुरी वासना (विषयभोग और पापकी इच्छाएँ) ।
पशु कौन है ?	जो सद्विद्यासे रहित (मूर्ख) है ।

वासो न सङ्गः सह कैर्विधेयो
मूर्खैश्च नीचैश्च खलैश्च पापैः ।
मुमुक्षुणा किं त्वरितं विधेयं
सत्सङ्गतिर्निर्ममतेशभक्तिः ॥१७॥

प्रश्न	उत्तर
किन-किनके साथ निवास और संग नहीं करना चाहिये ?	मूर्ख, नीच, दुष्ट और पापियोंके साथ ।
मुक्ति चाहनेवालोंको तुरंत क्या करना चाहिये?	सत्संग, ममताका त्याग और परमेश्वरकी भक्ति ।

लघुत्वमूलं च किमर्थितैव
गुरुत्वमूलं यदयाचनं च ।

जातो हि को यस्य पुनर्न जन्म
को वा मृतो यस्य पुनर्न मृत्युः ।१८

प्रश्न	उत्तर
छोटेपनकी जड़ क्या है?	याचना ही ।
बड़प्पनकी जड़ क्या है?	कुछ भी न माँगना ।
किसका जन्म सराहनीय है?	जिसका फिर जन्म न हो ।
किसकी मृत्यु सराहनीय है?	जिसकी फिर मृत्यु नहीं होती ।

मूकोऽस्ति को वा बधिरश्च को वा
वक्तुं न युक्तं समये समर्थः ।
तथ्यं सुपथ्यं न शृणोति वाक्यं
विश्वासपात्रं न किमस्ति नारी ।१९।

प्रश्न	उत्तर
गूँगा कौन है?	जो समयपर उचित वचन कहनेमें समर्थ नहीं है।

और बहिरा कौन है ?	जो यथार्थ और हितकर वचन नहीं सुनता ।
विश्वासके योग्य कौन नहीं है ?	नारी ।

तत्त्वं किमेकं शिवमद्वितीयं
किमुत्तमं सच्चरितं यदस्ति ।
त्याज्यं सुखं किं स्त्रियमेव सम्य-
ग्देयं परं किं त्वभयं सदैव ।२०।

प्रश्न	उत्तर
एक तत्त्व क्या है ?	अद्वितीय कल्याण-तत्त्व (परमात्मा) !
सबसे उत्तम क्या है ?	जो उत्तम आचरण है ।
कौन-सा सुख तज देना चाहिये ?	सब प्रकारसे स्त्रीका सुख ही ।
देने योग्य उत्तम दान क्या है ?	सदा अभय ही ।

शत्रोर्महाशत्रुतमोऽस्ति को वा
काम: सकोपानृतलोभतृष्ण: ।
न पूर्यते को विषयै: स एव
किं दु:खमूलं ममताभिधानम् ।२१।

प्रश्न	उत्तर
शत्रुओंमें सबसे बड़ा भारी शत्रु कौन है ?	क्रोध, झूठ, लोभ और तृष्णासहित काम ।
विषयभोगोंसे कौन तृप्त नहीं होता ?	वही काम ।
दु:खकी जड़ क्या है ?	ममता नामक दोष ।

किं मण्डनं साक्षरता मुखस्य
सत्यं च किं भूतहितं सदैव ।
किं कर्म कृत्वा न हि शोचनीयं
कामारिकंसारिसमर्चनाख्यम् ।२२।

प्रश्न	उत्तर
मुखका भूषण क्या है?	विद्वत्ता।
सच्चा कर्म क्या है?	सदा ही प्राणियोंका हित करना।
कौन-सा कर्म करके पछताना नहीं पड़ता?	भगवान् शिव और श्रीकृष्णका पूजनरूप कर्म।

कस्यास्ति नाशे मनसो हि मोक्षः
क्व सर्वथा नास्ति भयं विमुक्तौ।
शल्यं परं किं निजमूर्खतैव
के के ह्युपास्या गुरुदेववृद्धाः ।२३।

प्रश्न	उत्तर
किसके नाशमें मोक्ष है?	मनके ही।
किसमें सर्वथा भय नहीं है?	मोक्षमें।
सबसे अधिक चुभनेवाली कौन चीज है?	अपनी मूर्खता ही।

उपासनाके योग्य कौन-कौन हैं ?	देवता, गुरु और वृद्ध।

उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते
किमाशु कार्यं सुधिया प्रयत्नात् ।
वाक्कायचित्तैः सुखदं यमघ्नं
मुरारिपादाम्बुजचिन्तनं च ।२४।

प्रश्न	उत्तर
प्राण हरनेवाले कालके उपस्थित होनेपर अच्छी बुद्धिवालोंको बड़े जतन-से तुरंत क्या करना उचित है ?	सुख देनेवाले और मृत्यु-का नाश करनेवाले भगवान् मुरारिके चरण-कमलोंका तन, मन, वचनसे चिन्तन करना।

के दस्यवः सन्ति कुवासनाख्याः
कः शोभते यः सदसि प्रविद्यः ।

मातेव का या सुखदा सुविद्या
किमेधते दानवशात्सुविद्या ।२५।

प्रश्न	उत्तर
डाकू कौन हैं ?	बुरी वासनाएँ ।
सभामेंशोभा कौन पाता है	जो अच्छा विद्वान् है ।
माताके समान सुख देनेवाली कौन है ?	उत्तम विद्या ।
देनेसे क्या बढ़ती है ?	अच्छी विद्या ।

कुतो हि भीतिः सततं विधेया
लोकापवादाद्भवकाननाच्च ।
को वातिबन्धुः पितरश्च के वा
विपत्सहायः परिपालका ये ।२६।

प्रश्न	उत्तर
निरन्तर किससे डरना चाहिये ?	लोक-निन्दासे और संसाररूपी वनसे ।

अत्यन्त प्यारा बन्धु कौन है ?	जो विपत्तिमें सहायता करे ।
और पिता कौन हैं ?	जो सब प्रकारसे पालन-पोषण करें ।

बुद्ध्वा न बोध्यं परिशिष्यते किं
शिवप्रसादं सुखबोधरूपम् ।
ज्ञाते तु कस्मिन्विदितं जगत्स्या-
त्सर्वात्मके ब्रह्मणि पूर्णरूपे ।२७।

प्रश्न	उत्तर
क्या समझनेके बाद कुछ भी समझना बाकी नहीं रहता ?	शुद्ध, विज्ञान, आनन्दघन कल्याणरूप परमात्माको।
किसको जान लेनेपर (वास्तवमें) जगत् जाना जाता है ?	सर्वात्मरूप परिपूर्ण ब्रह्म-के स्वरूपको ।

किं दुर्लभं सद्गुरुरस्ति लोके
सत्सङ्गतिर्ब्रह्मविचारणा च ।
त्यागो हि सर्वस्य शिवात्मबोधः
को दुर्जयः सर्वजनैर्मनोजः ।२८।

प्रश्न	उत्तर
संसारमें दुर्लभ क्या है ?	सद्गुरु, सत्सङ्ग, ब्रह्म-विचार, सर्वस्वका त्याग और कल्याणरूप परमात्माका ज्ञान ।
सबके लिये क्या जीतना कठिन है ?	कामदेव ।

पशोः पशुः को न करोति धर्मं
प्राधीतशास्त्रोऽपि न चात्मबोधः ।
किन्तद्विषं भाति सुधोपमं स्त्री
के शत्रवो मित्रवदात्मजाद्याः ।२६।

प्रश्न	उत्तर
पशुओंसे भी बढ़कर पशु कौन है ?	शास्त्रका खूब अध्ययन करके जो धर्मका पालन नहीं करता और जिसे आत्मज्ञान नहीं हुआ।
वह कौन-सा विष है जो अमृत-सा जान पड़ता है ?	नारी।
शत्रु कौन है जो मित्र-सा लगता है ?	पुत्र आदि।

विद्युच्चलं किं धनयौवनायु-
र्दानं परं किञ्च सुपात्रदत्तम्।
कण्ठङ्गतैरप्यसुभिर्न कार्यं
किं किं विधेयं मलिनं शिवार्चा।३०।

प्रश्न	उत्तर
बिजलीकी तरह क्षणिक क्या है ?	धन, यौवन और आयु।

सबसे उत्तम दान कौन-सा है ?	जो सुपात्रको दिया जाय।
कण्ठगत प्राण होनेपर भी क्या नहीं करना चाहिये और क्या करना चाहिये ?	पाप नहीं करना चाहिये और कल्याणरूप परमात्माकी पूजा करनी चाहिये ।

अहर्निशं किं परिचिन्तनीयं
संसारमिथ्यात्वशिवात्मतत्त्वम् ।
किं कर्म यत्प्रीतिकरं मुरारेः
कास्था न कार्या सततं भवाब्धौ ।२१।

प्रश्न	उत्तर
रात-दिन विशेषरूपसे क्या चिन्तन करना चाहिये ?	संसारका मिथ्यापन और कल्याणरूप परमात्माका तत्त्व ।
वास्तवमें कर्म क्या है ?	जो भगवान् श्रीकृष्णको प्रिय हो ।

सदैव किसमें विश्वास नहीं करना चाहिये ?	संसार-समुद्रमें ।

कण्ठङ्गता वा श्रवणङ्गता वा
प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला ।
तनोतु मोदं विदुषां सुरम्यं
रमेशगौरीशकथेव सद्यः ।३

यह प्रश्नोत्तर नामकी मणिरत्नमाला कण्ठमें या कानोंमें जाते ही लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु औ उमापति भगवान् शङ्करकी कथाकी तरह विद्वा के सुन्दर आनन्दको बढ़ावे ।

— ॐ —

श्री गणेशाय नमः ॥

श्री शंकराचार्यजी का पंचमाश्रमम् ।

ॐ चिन्मयं व्यापिनं ब्रह्म,
माकाशं जगदीश्वरम् ।
निराकारं स्वयं ब्रह्म,
तस्याहं पंचमाश्रमम् ॥१॥

निराकारं निराभासं,
निरालम्बं निरञ्जनम् ।
निःशब्दमुच्यते ब्रह्म,
तस्याहं पंचमाश्रमम् ॥२॥

ब्रह्मचारी गृहस्थश्च,
वानप्रस्थो यतीश्वरः ।
आश्रमानां च भिन्नोऽहं,
तस्याहं पंचमाश्रमम् ॥३॥

आश्रमाणां च सर्वेषाम्,
अस्ति नास्ति न चात्मानाम् ।
भिन्नाभिन्नं न पश्यामि,
तस्याहं पंचमाश्रमम् ॥४॥

आब्रह्मस्तम्भ पर्यन्तं,
सम्पूर्णं परमात्मनः।
चर्म चर्म न जानाति,
तस्याहं पंच माश्रमम्।।५।।
मनस्थं मन मध्यस्थं,
मन माया विवर्जितम्।
मनसा मन मालोक्य,
तस्याहं पंच माश्रमम्।।६।।
अगोचरेय दाष्टीनं,
तस्य देहे विलीयते।
निवर्तन्ते क्रिया सर्वे,
तस्याहं पंच माश्रमम्।।७।।
निरालम्बं गतं प्राणं,
यत्र ज्योति लयं गतम्।
निवर्तन्ते इन्द्रियाणीति,
तस्याहं पंच माश्रमम्।।८

स्वयं दीक्षा स्वयं भोक्ता,
स्वयं देवो श्वरेश्वरः।
निर्विकल्पं स्वयं ब्रह्म,
तस्याहं पंच माश्रमम्॥८
क्वचिद्भोगी क्वचित्त्यागी,
क्वचिच्चेन्द्र पिशाचवत्।
स्वयं मात्मा स्वरूपेण,
तस्याहं पंच माश्रमम्॥१०
क्षमारूपी जित क्रोधी,
सत्यवादी दृढ़ व्रतः।
सार भाव परित्यागी,
तस्याहं पंच माश्रमम्॥११
देहातीतं मनोतीतं,
देहस्थं देह - वर्जितम्।
देह भावं परित्यागी,
तस्याहं पंच माश्रमम्॥१२

यत्रयत्र कृतं भिक्षा,
मुक्तोहं सर्व कर्माणि,
कर्मो कर्म न जानाति,
तस्याहं पंचमाश्रमम ॥१३

लोकलज्जा विनिर्मुक्तो,
चोर व्याघ्र भयं नाहिं, भयं न
भयाभयं न जानाति,
तस्याहं पंचमाश्रमम ॥१४

सुख दुःख विनिर्मुक्तो,
शीतोष्णादि भयं नाहि।
लाभालाभौ न जानाति,
तस्याहं पंचमाश्रमम् ॥१५॥

मित्रारि पक्ष विनिर्मुक्तो,
दुःख सुख भयं नाहि।
सुखात्मा सर्व भूतात्मा,
तस्याहं पंचमाश्रमम ॥१६

द्वन्द्व व्याधि विनिर्मुक्तो, विवर्जी
आशा पास विवर्जितः।
लोक शंका भय नासो, (नास्ती
तस्यादं पंचमाश्रमम् ॥१७॥
ज्ञान विज्ञान सम्पन्नो,
ब्रह्म वेत्ता मुनीश्वरः।
न तीर्थ होपवासंच,
तस्यादं पंचमाश्रमम् ॥१८
मुमुक्षुर्ब्रह्म निष्ठंच,
परं निष्ठं परं शिवम्।
सर्व धर्म परित्यागी
तस्यादं पंचमाश्रमम् ॥१९॥
अध्यात्म विद्या संदोग्धा,
वेदान्तांबुज भास्करः।
वेद मार्ग परित्यागी,
तस्यादं पंचमाश्रमम् ॥२०

दंड कमण्डलु त्यागी,
कौटिसूत्रांबरं त्यजेत् ।
जगस्थावरभिन्नो हं,
तस्याहं पंचमाश्रमम् ॥२१॥
जीव भाव परित्यागी
शिवभाव मनोहटम् ।
स्वर्ग नरकं न जानाति,
तस्याहं पंचमाश्रम ॥२२॥
विदेही वीतरागी च,
षडूर्मिनाम साधकः,
षड्वैरीवृन्दे विद्धं
तस्याहं पंच माश्रमम् ॥ २३
स्वयंब्रह्मा स्वयं शक्ति:
स्वंय विष्णुः सदाशिव ।
सर्वेश्वरः सर्व साक्षी
तस्याहं पंचमाश्रमम् ॥२४॥

वालोन्मत्त पिशाचोगन,
शापानुग्रह संभवाल।
राजारंक समं दृष्ट्वा,
तस्याहं पंच-माश्रमम्॥२५॥
वर्णो वर्ण न जानाति,
दिवारात्रो न-लक्ष्यते।
पापं पुण्यं न जानाति, ॥२६
तस्याहं पंचमाश्रमम्॥
भिक्षाचर्य वर्णेषु,
मद्यमांस न भुंजाति।
भक्ष्याभक्ष्य न जानाति,
तस्याहं पंच माश्रमम्॥२७॥
सच्चिदानन्द रूपोहं,
शिवोहं निर्गुणोस्म्यहं।
एवं भावयते नित्यं,
तस्याहं पंच-माश्रमम्॥२८॥

पंच मूल प्रमोनो हूं,
मायारि गुण नाशकः।
तत्ववेत्ता महात्मा हूं,
तस्माद् पंच मासमम् ॥२॥
कश्चित् लोभी क्वचित् क्षोभी,
क्वचित् सज्जन - निरंजनः।
लोका लोक न जानाति,
तस्याहं पंचमासमम् ॥३॥
नारींच नरकं दृष्ट्वा,
संगेच सकलो पमम्।
हेमं उत्ता उत्तं दृष्टो,
तस्याहं पंच मासमम् ॥४॥
एकत्र मकद्वावासी,
रमते भुवन त्रयम्।
नग्नो दिगम्बरो दिव्यो,
तस्याहं पंचमासमम् ॥५॥

कामं क्रोधंन्च लोभंन्च ।
मोहादि सकलं त्यजेत् ।
हेम लोष्ठ न जानाति,
तस्याहं पंचमाश्रमम् ॥ ३

x अद्वयस्य अखंडस्य,
प्रकाशं परमेश्वरम् ।
ब्रह्म विष्णु साक्षात्, (विष्णु
तस्याहं पंचमाश्रमम् ॥ ४
औदासिन्यं सदात्मानं । औदासिन्यं
परिवृप्तिर्महात्मनः ।
इन्द्रं च कीट वद् दृष्ट्वा
तस्याहं - पंचमाश्रमम् ॥ ५
अभिन्नात्मात्मनोरूपं,
जगदेकं चराचरम् ।
निर्विकल्पं स्वयं ब्रह्म (३६)
तस्याहं पंचमाश्रमम्

~~एवंविधि ... ~~

एवञ्चैव परमज्ञानं,
चिन्हं वै पंचमाश्रमम् ।
लक्षणं हंस मार्गस्य,
परम हंस शिवस्यच ॥४१॥

ब्रह्मचर्य पदंचादौ,
द्वितीयं गृहस्थाश्रमम् ।
तृतीयं वाणप्रस्थंच,
सन्यासं चतुर्थकम् ॥ ४२॥

पंचम हंस दीक्षान्च,
साक्षी शिवस्वरूपकम्,
वेद ~~...~~ मार्गो विनिर्मुक्तो,
कर्मा कर्म विवर्जितम् ॥४३

चत्वारो श्रम बाह्योहं,
मुक्तोहं पंचमाश्रमम् ।
भिन्नोऽहं वेद कर्माणि,
केवलं ब्रह्मरूपिणम् ॥४४

माता यस्य पिता धन्यं,
धन्यो तत्र कुलं तथा।
कुल कोटि समुद्धाय,
तस्याहं श्चमाश्रमम् ॥४५

सहस्र ब्राह्मणं भुक्त्वा,
यतीमेक समं भवेत।
यतीच अयुतं भुंजन
हंसमेकं समं स्वतु ॥४६

हंसो यस्य गृहे भुंक्ते
तस्य गृहे शिवः स्वयम।
यत्र भुंक्ते शिवः साक्षात
तत्र भुंक्ते जगा त्रयम ॥४७॥

सन्यासी विष्णु रूपी च,
हंसं च शिवरूपिणम्।
दर्शनस्यास्य मात्रेण
वह्दो मुक्तो न संशयः ॥४८

क्रियाहीनो मति भ्रष्टो
अशक्ते पुण्य कर्मणि,
परद्वारा गमो - नित्यम्।
तरन्ति हंस - पूजनात्॥४९॥

हंसोदन्त शिवः साक्षात्
वामदेव शुकादयः।
हंस हंसोति - हंसोति,
हंस्योनाम सदाशिवः॥५०॥

सनकाद्याहंस्य हंसश्च,
कपिलाद्या महामुनि,
नारायण परं ब्रह्म,
हंसरूपी न - संशयः॥५१॥

नास्ति हंस परं देवं,
नास्ति हंस परमं पदम्
नास्ति हंस परं [illegible] ध्यानं
[illegible]

नास्ति हंस परो मार्गो ।
नास्ति हंस परं जपः ।
नास्ति हंस परं पूजा,
तस्माद्हंस भवेद्बुधैः ॥

इति विद्या पठन्नित्यं,
श्रवणं मननं कृतम्,
निदिध्यासेन प्राप्नोति,
साक्षात्कारो न संशयः ॥

य इदं पठते नित्यं,
यति वायति पूजकः ।
~~[illegible]~~
जीवन्मुक्तो भवेत्सोपि
सत्यं सत्यं न संशयः ॥

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजका-
-चार्य श्रीशंकराचार्य
विरचितं श्री परमहंस
पंचमाश्रमकं चिन्हं
कथ समाप्तम् ॐ शिव शिव
शुभम्

कौपीन - पंचकम्

वेदान्तवाक्येषु सदा रमन्तो, भिक्षान्न
भिक्षान्न मात्रेण तुष्टिमन्तः।
अशोकवन्तः करुणैकवन्तः,
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः॥१॥

मूलं तरोः केवलमाश्रयन्तः,
पाणिद्वयं भोक्तुममन्त्रयन्तः।
कन्थामपि स्त्रीमिव कुत्सयन्तः,
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः॥२॥

देहाभिमानं परिहृत्य दूरा-
दात्मानमात्मन्यवलोकयन्तः।
अहर्निशं ब्रह्मणि ये रमन्तः,
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः॥

॥३॥

स्वानन्दभावे परितुष्टिमन्तः,
स्वशान्त सर्वेन्द्रिय वृत्तिमन्तः।
नान्तं न मध्यं न बहिः स्मरन्तः,
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः ॥ ४ ॥

पंचाक्षरं पावनमुच्चरन्तः,
पतिं पशूनां हृदि भावयन्तः।
भिक्षाशना: दिक्षु परिभ्रमन्तः,
कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः॥
॥ ५ ॥

ॐ चर्पट पंजरिका
पंजरिका
भजगोविन्दं भज गोविन्दं,
गोविन्दं भज मूढ़ मते।
प्राप्ते सन्निहिते मरणे,
नहि नहि रक्षति 'डुकृञ् करणे'
भजगोविन्दं॥१॥
बालस्तावत्क्रीडा सक्तस्त-
रुणस्तावत्तरुणी रक्तः।
वृद्धस्तावच्चिन्ता मग्नः
परे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः॥
भज गोविन्दं भजगोविन्दं॥२॥
X
पुनरपि जननं पुनरपि मरणम्,
पुनरपि जननी जठरे शयनम्।
इह संसारे खलु दुस्तारे,
कृपयाऽपारे पाहि मुरारे॥
भजगोविन्दं भजगोविन्दं
गोविन्दं भज मूढ मते॥

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डम्,
दशन विहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डम्,
तदपि न मुञ्चत्याशा पिण्डम्॥३॥
भज गोविन्दं

× पुनरपि जननं पुनरपि मरणम्,
पुनरपि जननी जठरे शयनम्।
इह संसारे खलु दुस्तारे,
कृपयाऽपारे पाहि मुरारे॥
भज गोविन्दं॥४॥

दिनमपि रजनी सायं प्रातः
शिशिर वसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायु,
स्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं॥५॥
भज गोविन्दं मूढमते॥

जटिलो मुण्डी लुञ्चित केशः
काषायाम्बर बहु कृत बेषः।
पश्यन्नपि न च पश्यति लोकः,
उदर निमित्तं बहुकृत वेषः॥६॥
भज गोविन्दं॥

वयसि गते कः काम विकारः,
शुष्के नीरे कः कासारः।
क्षीणे वित्ते कः परिवारो,
ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः॥
भज गोविन्दं भज॥७॥

अग्ने वह्निः पृष्ठे भानु,
रात्रौ चिबुक समर्पित जानुः।
करतल भिक्षा तरुतल वास-
स्तदपि न मुञ्चत्याशा पाशः॥८॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं।
भज गोविन्दं मूढ मते॥

यावद्वित्तोपार्जन सक्तस्ता-
वन्निज परिवारो रक्तः।
पश्चाज्जर्जर भूते देहे,
वार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं॥५॥

रथ्या चर्पट विरचित कंथः
पुण्या पुण्य विवर्जित पंथः।
नत्वं नाहं नायं लोकः,
तदपि किमर्थं क्रियते शोकः॥
भज गोविन्दं भज॥

नारीस्तनभर जघन निवेशं,
दृष्ट्वा मिथ्या मोहावेशम्।
एतन्मांसवसादि विकारं,
मनसि विचारय वारंवारम्॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
गोविन्दं भज मूढ मते॥

गेयं गीता-नामसहस्रं
ध्येयं श्रीपति रूप मजस्रम्।
नेयं सज्जन संगे चित्तं
देयं दीनजनाय च वित्तम्॥
भजगोविन्दं ॥२७॥

भगवद्गीता किंचिदधीता,
गंगाजल लव कणिका पीता।
येनाकारी मुरारे चर्चा
तस्य यम किं कुरुते चर्चा।
भजगोविन्दं भज. ॥१३॥

~~कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः~~
~~संसारोऽयमतीव विचित्रः~~
~~कस्य त्वं वा कुत आयातः~~
कोऽहं कस्त्वं कुत आयातः
का मे जननी को मे तातः

इति पी भावेण सर्व संसार
सर्व त्यक्त्वा स्वप्न विचारम्।
भजगोविन्दं - - ॥१४॥

काते कान्ता कस्ते पुत्रः,
संसारोऽयमतीव विचित्रः।
कस्य त्वं वा कुत आयातः
तत्त्वं चिन्तय तदिदं भ्रातः॥
भजगो० ॥१५॥

सुरतटिनी तरु मूल निवासः,
शय्या भूतलमजिनं वासः।
सर्व परिग्रह भोग त्यागः,
कस्य सुखं न करोति विरागः॥
॥१६॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं
गोविन्दं भज मूढ मते॥
॥ [illegible] ॥

प्राचीन शंभवी

कर चरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व। जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शंभो॥४०

ब्रह्मज्ञान को जाप है अजपा सोहंग
साधु परमहंस कई जान है जाको मतो अगाध। नाभि नासिका माहि है सोहंग सोहंग जाप, सोई अजपा जाप है छूटे पुनः उपर पाप॥

एतदुन्नादिकं सर्वं
सोपकर्णं ब्रह्मार्पणमस्तु